* अध्याय-दूसरा *

*** तुलनात्मक अध्ययन की पद्धतियाँ **

आज की वैज्ञानिक आलोचना के लिये तुलना का काफी महत्त्व है। तुलना के बिना साहित्य कीआलोचना पूरी नहीं हो पाती। तुलनात्मक अध्ययन के लिये कम - से - कम दो कृतियों, कवियों अथवा साहित्यकारों की आवश्यकता होती है। तुलनात्मक अध्ययन का मुख्य उद्देश्य कृतियों का सम्यक् अध्ययन और अनुशीलन होता है। - तत्कालीन परिस्थितियों के अनुरूप दो कृतियों के विषय के साम्य - वैषम्य का निरूपण करना तुलनात्मक अध्ययन का कार्य है। इस पद्धति में साहित्यकारों अथवा कृतियों की किसी - न - किसी रूप में तुलना होती ही है - चाहे श्रेष्ठता - अश्रेष्ठता का निर्धारण करना हो या गुणों अभावों का समीक्षण करना हो। अत: दो कृतियों का, कृतिकारों का सर्वांगीण एवं सूक्ष्म अध्ययन कर पक्षपातरहित सापेक्षिक मूल्यांकन ही तुलनात्मक अध्ययन है।[१] "व्याख्यात्मक आलोचना", "निर्णयात्मक आलोचना", "तुलनात्मक आलोचना", "ऐतिहासिक आलोचना" आदि आलोचना के प्रमुख प्रकार हैं।

व्याख्यात्मक आलोचना में आलोच्य वस्तु का सभी अंगों से विश्लेषण किया जाता है, विश्लेषण के उपरान्त किसी निष्कर्ष पर पहुँचा जाता है। व्याख्यात्मक आलोचना में विश्लेषण और विवेचन - विवरण को अधिक महत्व रहता है। इस आलोचनामें सिद्धान्तों को महत्त्व नहीं रहता, यहाँ कृति के विश्लेषण को - व्याख्या को - प्रमुखता दी जाती है। लेखक या कवि ने जो लिखा है उसकी अंतरात्मा तक सहृदयता से पहुँचने का प्रयास व्याख्याकार करता है। लेखक अथवा कवि के मूल उद्देश्यों, आदर्शों की व्याख्या तथा विवेचन करना इसप्रकार की आलोचना का प्रमुख कार्य है। इस आलोचना की विशेषतायें हैं - यहाँ आलोचक अन्वेषक होता है न्यायाधीश नहीं। वह पहले - पहल रचनाकार की कृति का उद्देश्य जानता है और उस उद्देश्य को सामने रखकर वह अपनी निरूपण पद्धति निर्धारित करता है। वह कवि के आकर्षणों, प्रेरणाओं का अतिशय सूक्ष्म परीक्षण करता है। व्याख्यात्मक आलोचना में कृति के गुण - दोषों की चर्चा नहीं होती है; लेखक के मूल उद्देश्य को विवेचित करने का प्रयास

होता है। इस आलोचना में तुलना करते वक्त श्रेष्ठ - कनिष्ठता का सवाल नहीं रहता। व्याख्यात्मक आलोचना में सिद्धान्तों को प्रमुख स्थान देकर आलोचना नहीं की जाती। व्याख्यात्मक आलोचना के जरिए कृति के सौंदर्य को, मूल विचार को, व्याख्यायित किया जाता है।[2]

निर्णयात्मक आलोचना को शास्त्रीय आलोचना भी कहते हैं। इसप्रकार की आलोचना में कुछ नैतिक साहित्यिक सिद्धान्त पहले स्थिर किया किया जाता है इसके पश्चात उन सिद्धान्तों को आदर्श मानकर उनके आधार पर कृति की परीक्षा की जाती है और सिद्धान्तों के आधार पर कृति की परीक्षा करके कृत्ति की श्रेष्ठता, कनिष्ठता आदि का निर्णय स्थापित किया जाता है। इस आलोचना में सिद्धान्त प्रमुख रहते हैं, कृति गौण। कई एक जगह स्थापित - सिद्धान्तों को महत्त्व रहता है तो कहीं वैसे ही नये सिद्धान्तों का सृजन का कार्य भी महत्त्व रखता है। सिद्धान्तों के विकास का कार्य इनके माध्यम से किया जाता है। यहाँ आलोच्य वस्तु का मूल्यांकन किया जाता हैं॥ अर्थात् इस पद्धति में आदर्श सिद्धान्त हैं। इन सिद्धान्तों के यहाँ इस बात का मूल्यांकन किया जाता है कि इन सिद्धान्तों के आदर्शों तक वह कृति कहाँ तक पहुँचती है। यह बताया जाता है कि उन आदर्शों तक पहुँचने के लिये उस आलोच्य कृति में क्या - क्या गुण चाहिये। कृति के आदर्श स्वरूप को बताया जाता है। निर्णयात्मक आलोचना में कई बार यांत्रिकता आ जाती है॥ निर्णयात्मक आलोचना आलोचना के क्षेत्र का आरंभबिंदु हैं। आज ऐसी आलोचना को श्रेष्ठता नहीं दी जाती है।[3]

तुलनात्मक आलोचना में दो पुस्तकों, दो कवियों अथवा लेखकों अथवा दो कालों अथवा दो भाषाओं की तुलना होती है। इस आलोचना में कोई-न - कोई समानता का सूत्र तुलना के लिये आवश्यक होता है। कभी-कभी एक ही कवि की भिन्न - भिन्न कृतियों की भी तुलना हो सकती है। तुलनात्मक आलोचना में दोनों कृत्तियों का सूक्ष्म अध्ययन करना चाहिये उन कृतियों के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डालना होगा। यहाँ दो बातें

महत्त्व की होती हैं [१] साम्य और [२] वैषम्य । तुलनीय बातों के एक - एक अंग को लेकर बातें करनी पड़ती हैं। तुलनात्मक आलोचना में वैज्ञानिक पद्धति अपनायी जाये तो वह तुलना अच्छी बनती है। दोनों कृतियों के प्रति समान पक्ष से दृष्टि रखनी चाहिये। तुलनात्मक आलोचना पद्धति पर्याप्त श्रेष्ठ नहीं कही जाती। तुलनात्मक आलोचना का अध्ययन आजकल अधिक चल रहा है इस दृष्टि से यह आलोचना महत्त्व की है।[४]

ऐतिहासिक आलोचना आलोचना के विभिन्न प्रकारों में से एक प्रकार है॥ प्रत्येक व्यक्ति अपने समय अपने काल की निर्मिती करता है॥ व्यक्ति की समस्त विचारधारा कालसापेक्ष रहती है। व्यक्तिपर अपने युग के प्रभावों का, प्राचीन सांस्कृतिक विरासत का, समाज - व्यवस्था के अंतर बाह्य प्रभावों आदि के कारण हमारी एक दृष्टि बनती है॥ समाज के भविष्य के निर्माण की जो धारणा है वह विचारधारा निर्धारित रहती है मनुष्य का संपूर्ण चिन्तन कालसापेक्ष रहता है। हर व्यक्ति की सोचने की जो प्रक्रिया है वह कालसापेक्ष होती है। कवि अथवा साहित्यकार युग का निर्माता होता है। साहित्यकार के मनोभावों तक पहुँचने का कार्य ऐतिहासिक आलोचना करती है। किसी भी भाषा के साहित्य को समुचित रूप में जानने के लिये ऐतिहासिक आलोचना पद्धति का बड़ा योगदान है।[५]

व्याख्यापरक आलोचना, निर्णयात्मक अथवा शास्त्रीय आलोचना, ऐतिहासिक आलोचना आदि आलोचना की विभिन्न पद्धतियाँ हैं। व्याख्यात्मक, निर्णयात्मक, ऐतिहासिक आलोचना का तुलनात्मक आलोचना में योगदान महत्त्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है। इन प्रत्येक पद्धतियों के तुलनात्मक आलोचना में योगदान को यहाँ स्पष्ट किया जा रहा है।

** व्याख्यापरक तुलनात्मक अध्ययन :-

समान दो विषयों की तुलना में अंतर बतलाते हुए लघुत्व और गुरुत्व का निरूपण करना, तुलनात्मक आलोचना का भी लक्ष्य नहीं है। अत: दो कवियों के समान भावों एवं विषयों की तुलना में "मात्रा का अन्तर" बतलाने की अपेक्षा "प्रकार का अन्तर" बतलाना ही व्याख्यापरक

तुलनात्मक आलोचना है। व्याख्यापरक तुलनात्मक अध्ययन में तटस्थता आवश्यक है।

"व्याख्या करते समय कुछ लोग सब अंतरों को मात्रा का ही अंतर समझते हैं और तुलना करते समय जब कोई भेद देखते हैं तो एक रचना को उच्चकोटि की और दूसरी को निम्नकोटि की कह देते हैं, या एक को शुद्ध और दूसरी को अशुद्ध बता देते हैं। परंतु अंतर प्रकार का भी हो सकता है। और व्याख्यात्मक आलोचना का कार्य प्रकार के भी भेदों को देखना है। उदाहरणार्थ, यदि एक कवि ने बालकृष्ण को लिया है और दूसरे ने प्रौढ़ कृष्ण को, तो इन दोनों के कृष्ण काव्यों में एक को उच्च और दूसरे को निम्न नहीं कह सकते, उनमें मात्रा का अन्तर नहीं है, वरन् प्रकार का अंतर है। बालकृष्ण - काव्य उतना ही उत्तम हो सकता है जितना प्रौढ़ कृष्ण - काव्य।"[6]

व्याख्यापरक तुलनात्मक दृष्टि वाला कोई भी समालोचक किसी कवि की कृतियों का पूरीतरह अंर्तबाह्य परीक्षण करे और "रचना से चलकर रचयिता के आशयतक" पहुँचे। आलोचक द्वारा "बाह्य साक्ष्य के आधार पर कल्पित अभिप्राय को ढूँढ निकालने के लिये रचना की व्याख्या नही की जानी चाहिये। साहित्य के सभी आंतरिक भावो, विचारों एवं कलात्मक सौष्ठव का गहन विश्लेषण, विवेचन और व्याख्या मे ही आलोचना की सार्थकता है। किसी ग्रन्थ की आलोचना को विषय, भाव और कला की दृष्टि से सम्पन्न करने के साथ ही ऐतिहासिक, सामाजिक और साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में उसका व्याख्यात्मक मूल्यांकन भी आवश्यक है।

व्याख्यात्मक आलोचना - पद्धति को सर्वाधिक व्यापक, समीचीन और श्रेष्ठ बताया है क्योंकि वही कवि या साहित्यकार की कृतियों की सूक्ष्म अंत: प्रवृत्तियों के उद्घाटन में समर्थ और उपर्युक्त होती है। इसी व्याख्यात्मक पद्धति में तुलनात्मक - पद्धति को अनुस्यूत माना, कृतियों की व्याख्या करने वाले आलोचक का कार्य तुलनात्मक दृष्टि के बिना वैज्ञानिक नहीं हो सकता। यह तुलनात्मक अध्ययन की बहुत प्रचलित पद्धति है। ७

** निर्णयात्मक अथवा शास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन पद्धति :-

इस पद्धति में वह देखती है कि काव्य एक निश्चित आदर्श के अनुरूप है या नहीं। अपनी निश्चित साहित्याभिरुचि के मानदण्ड से वह उस कृति को देखती है; नवीनता पर नियंत्रण रखती है। वह साहित्यिक कृतियों को अपनी विचार - पद्धति के मेल में रखने का प्रयत्न करती है। अत: तुलनात्मक आलोचना ने पूर्व-निर्धारित मानदण्डों के आधारपर दिये निर्णयों की अपेक्षा व्याख्या और विश्लेषण जनित मर्यादित निर्णयों को सर्वथा युक्ति-युक्त माना।[८]

इस पद्धति का मुख्य कार्य यह है कि वह "आलोच्य ग्रंथ को उसके वास्तविक रूप में देखे, किसी बुरे अथवा पक्षपात से प्रेरित होकर आलोचक जो कुछ कहेगा उस कथन को निर्णयात्मक तुलनात्मक आलोचना में स्थान न मिलेगा।" निर्णयात्मक तुलनात्मक अध्ययन - पद्धति कलाकारों की प्रमुख तथा गौण विशेषताओं का विस्तृत विवेचन कर कल्पना और भावोद्रेक इत्यादि के आधार पर उनकी श्रेष्ठता प्रदान करती है। निर्णयात्मक अथवा शास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन पद्धति का मुख्य उद्देश्य कलाकार के अच्छे बुरे होने का निर्णय न करके काव्य के विशेष तत्वों को लेकर, वह कलाकार द्वारा रचित काव्य का अर्थ स्पष्ट करे।[९]

** ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन पद्धति :-

इस पद्धति में साहित्यकार की कृति की पृष्ठभूमिका के साथ - साथ इतिहास का भी शोध रहता है। साहित्य समाज का दर्पण है, इसलिए इस प्रणाली में यह खोज की जाती है कि जिस युग में साहित्यकार था उस समय देश की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियाँ कैसी थीं और साहित्यकारों की रचनाओं पर उनके प्रभाव किस रूप में और कहाँ तक पड़े हैं।[१०]

यह पद्धति ऐतिहासिक तथ्यों, पूर्ववर्ती साहित्यिक मान्यताओं तथा युगीन सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य को दृष्टि में रखकर दो साहित्यिक कृतियों की पारस्परिक विवेचना करती है। इसका मूल उद्देश्य ही इतिहास के सत्यों को अपने समक्ष रखकर कृतियों की

परिक्षा करना है।[११] तुलनात्मक आलोचना के दो महत्त्वपूर्ण पक्ष हैं -"तुलना और इतिहास। साहित्य की आलोचना तभी वैज्ञानिक होती है जब तुलना और इतिहास के आधार पर उसकी भित्ति उठाई जाती है। जिस आलोचक की दृष्टि तौलनिक और ऐतिहासिक न होगी वह भले ही साहित्य का भावग्रहण करके भावुक बन जाय, पर वह सच्चा पारखी तो कभी नहीं हो सकता।"[१२]

तुलना एक विषय के अथवा एक समय के साहित्यकारों की या एक ही साहित्यकार की अनेक कृतियों की, की जाती है। उपर्युक्त पद्धतियों के अलावा तुलनात्मक पद्धति में भिन्न तथ्यों का होना आवश्यक है वे यों हैं - -

[१] दो कृतियों की तत्कालीन परिस्थितियों का परीक्षण एवं तदनुसार विषय के साम्य - वैषम्य का निरुपण।

[२] दो कृतियों के प्रतिपादय विषय एवं उनके परम्परागत मूल स्त्रोतों का अन्वेषण।

[३] प्रतिपादय विषय की अभिव्यक्ति एवं कृतियों के साहित्य - सौष्ठव की तुलना।-

[४] दो कृतियों के विविध पक्षों के उद्घाटन एवं बौद्धिक और रागात्मक तथ्यों का वैज्ञानिक परीक्षण कर निरपेक्ष मूल्यांकन।

[५] तुलनात्मक निष्कर्ष रुप में कृतियों की मौलिकता का प्रतिपादन।[13]

दो कृतियों के मूल्यांकन के पूर्व उनकी तत्कालीन परिस्थितियों का अंकन अनिवार्य हो जाता है। ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक पृष्ठभूमियों में रखकर जबतक दो कृतियों की परीक्षा नहीं की जाती, तब तक उनका मर्म नहीं खुलता। समान परिस्थितियों में निर्मित कृतियों की तुलना सहज भाव से हो जाती है; क्योंकि एक ही संस्कृति और युगीन परिवेश में प्रादुर्भूत साहित्यिक कृतियों का प्रांतीय एवं स्थानीय वैषम्य दृष्टिगत होता है, किन्तु उनमें गहरा आन्तरिक साम्य होता है।[१४]

कृतियों के तुलनात्मक परीक्षण के लिये दूसरा तथ्य है - प्रतिपादय विषय की तुलना। एक समान कृतियों के प्रतिपादय विषय में एकता होती है। प्रश्न है कि इन विषयों का मूल उद्गम स्थल कहाँ है ? राम और कृष्ण साहित्य की रचना करनेवालों की कृतियों में तो विषयवस्तु और प्रतिपादय लगभग समान ही हुआ करते हैं। तुलनात्मक आलोचक इस बात को स्पष्ट करता है कि एक समान विषय पर लिखी दो कृतियों में इतिहास के तथ्य कितने हैं और कृतिकार की कल्पना कितनी है।[15]

ऐतिहासिक परीक्षण के अतिरिक्त तुलनात्मक आलोचक दो कृतियों की साहित्यिक परंपरा की खोज करता है। दो कृतियों के विषय का प्रतिपादन जब जीवन के शाश्वत मूल्योंपर अवलम्बित रहता है, तब समस्त विश्व - साहित्य - एक - सा दिखाई देता है। डॉ. नेमेन्द्र ने लिखा है, यह विषय मानव जीवन की शाश्वत वृत्तियों - हर्ष, शोक, प्रेम, विरह, क्रोध, स्नेह, आश्चर्य, जिज्ञासा, ममता तथा उत्साह इत्यादिपर अवलंबित रहता है, जो कि युग युगान्तरों में सदा सर्वदा एक रूपमें ही वर्तमान रहती है, और जो मानव की संवेदनशीलता एवं चेतना सम्पन्नता की परिचायिका है। अत: तुलनात्मक आलोचक दो कृतियों में, शाश्वत एवं उदात्त जीवन-तत्व और उद्देश्य की परख करता है, वहाँ उनके प्रतिपादक मूल्यों की प्रशंसा करता है॥ क्योंकि "साहित्य में प्रतिपादित विषय की उत्कृष्टता, उसमें अभिव्यक्त उच्चादर्श, महान आध्यात्मिक एवं दार्शनिक चिन्तन तथा विराट भाव - सौन्दर्य पर आधारित होती है।"[16]

प्रतिपादय विषय की अभिव्यक्तिशैली भी दो कृतियों के मूल्यांकन में महत्त्वपूर्ण होती है। दो कृतियों में एक समान विषयवस्तु को किस ढंग से प्रस्तुत करने की चेष्टा की गई है, उनके प्रस्तुतीकरण में कितना सौन्दर्य है तथा अभिव्यंजना - शैली की क्या विशेषता है। अभिव्यंजना - शैली से दो कृतियों का अन्तर भी स्पष्ट हो जाता है; क्योंकि उसमें साहित्यकार के व्यक्तित्व की प्रधानता रहती है। शैली में भाषा - सौष्ठव, अलंकार, रीति, गुण, वृत्ति आदि आते हैं। तुलनात्मक आलोचक शैलियों की तुलनाद्वारा कृतियों का मूल्यांकन करता है।[17]

दो कृतियों की शैलियों के तुलनात्मक अध्ययन में रूपात्मक, विषयमूलक, सिद्धान्तमूलक, विचार अथवा प्रभावमूलक तुलना आदि का समावेश होता है। इसमें से प्रभावमूलक तुलनात्मक अध्ययन को अधिक महत्त्व दिया जाता है। -

एक साहित्य का दूसरे साहित्य पर पड़े हुए प्रभाव का अध्ययन तुलनात्मक आलोचना का महत्त्वपूर्ण तथ्य है। साहित्य में प्रभाव-ग्रहण मूलत: दो बातों का होता है -

१. विभिन्न सांस्कृतिक, दार्शनिक, सामाजिक, राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के प्रभाव ।

२. विभिन्न विचारधारा-प्रसूत विविध साहित्यिक प्रवृत्तियों एवं विशेषताओं के प्रभाव ।

वस्तुत: प्रभाव - ग्रहण के तीन रूप हो सकते हैं - [१] भावापहरण [२] भावसादृश्य [३] भाव - परिष्कार।

कुछ स्थलों पर कोरा प्रभावग्रहण और कोरी नकल साहित्य में दिखाई पड़ सकती है, वहाँ "भावापहरण" की स्थिति मानी जाती है। वहाँ अनुकरण के सिवा साहित्य में कोई विशेष चमत्कार नहीं दिखाई देता। दूसरी स्थिति प्रभाव-ग्रहण की तब मानी जाती है, जहाँ दो साहित्यकारों के भाव मिल सकते हैं ॥ प्रभाव - ग्रहण की तीसरी स्थिति तब होती है, जब श्रेष्ठ साहित्यिक अपने पूर्ववर्ती साहित्य के उत्कृष्ट भाव को अतिशय श्रद्धा वा मुग्धतावश ग्रहण कर लेते हैं और उन्हें उत्कृष्टतम और नवीन रूप में उपस्थित करते हैं। कभी - कभी वह स्थिति विपरीत भी हो सकती है। पूर्ववर्ती भावों के प्रभाव - ग्रहणकर्ता साहित्यकार निकृष्ट कलात्मक रूप में उपस्थित कर सकता है, किन्तु ऐसा प्रतिभाविहीन साहित्यकार ही करता है।[१८]

शोधकर्ता आलोचक पूर्ववर्ती और परवर्ती दोनों साहित्यों का साम्य - वैषम्यमूलक तुलनात्मक अनुशीलन करते हैं और दोनों के बीच पार्थक्य और

मौलिकता उत्पन्न करनेवाले तत्वों की खोज करते हैं। अत: प्रभावों की खोज समीक्षा का मूल उद्देश्य होता है - पूर्ववर्ती साहित्य की जीवन्त परंपरा से कुछ तत्व ग्रहणकर परवर्ती साहित्य की विकासनशील, नवीन और मौलिक विशेषताओं की खोज करना।[१९]

प्रभावमूलक आलोचक प्रभावों के विश्लेषण में कृतिकारों, कृतियों और प्रवृत्तियों की साम्य - वैषम्यमूल तुलना भी करता है। वह परवर्ती साहित्य को प्रेरित करने वाले तथ्यों की सम्यक् छानबीन करता है और उसकी साहित्यिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक और मानवतावादी परम्परा का उद्घाटन करता है। प्रभावमूलक आलोचक लोकजीवन और परिवेश के कारण ही परवर्ती और पूर्ववर्ती के बीच अलगाव उत्पन्न करता है। इसके बावजूद वह उनमें अभिन्नता और एकता स्थापित करने का भी प्रयास करते हैं। वह किसी भी पूर्ववर्ती प्रभाव के कारण लिखी साहित्यिक कृति को उसके युग की मौलिक और नवीन कृति मानता है तथा उसे समाज के लिए सर्वथा उपादेय स्वीकार करता है। अत: प्रभावपरक मूल्यांकन तुलनात्मक आलोचना की एक स्वतन्त्र प्रवृत्ति है।[२०]

प्रस्तुत प्रबन्ध के चयन का दृष्टिकोण विषय की समानता है। दूसरे, ऐतिहासिक भावभूमि या शैलीगत साम्य के कारण तुलनात्मक प्रतिक्रिया के सर्वथा योग्य है। प्रत्येक लेखक का दृष्टिकोण भिन्न - भिन्न हो सकता है। यहाँ समस्त विचारों तथा दृष्टिकोणों को समझना उद्देश्य नहीं है; विषय पर लेखकों का दृष्टिकोण या समय का प्रभाव आदि को देखना है। हमारे अध्ययन का मूल उद्देश्य है, कृतियों में चित्रित "विभाजन समस्या"।

प्रस्तुत प्रबन्ध में हमें ऐतिहासिक तुलनात्मक अध्ययन पद्धति द्वारा, तीनों कृतियों में चित्रित विभाजन समस्या की तुलना करनी है। इसमें हमें मूल ऐतिहासिक घटनाएँ तथा उनका कृतियों में चित्रित करने का लेखकों का दृष्टिकोण देखना है। विभाजन के समय की ऐतिहासिक स्थिति, घटनाओं के चित्रण में तीनों की विचारदृष्टि, साम्य - वैषम्य, विशेषताएँ आदि को देखना है।

सन्दर्भ - सूची

१. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना", चित्रलेखा प्रकाशन, प्रथम संस्करण, १९८६, पृ. ११

२. डॉ. भगीरथ मिश्र, "काव्यशास्त्र", विश्वविद्यालय प्रकाशन, तृतीय संस्करण १९६६, पृ. १४९

३. डॉ. भगीरथ मिश्र, "काव्यशास्त्र", -"- पृ. १४८-१४९

४. डॉ. भगीरथ मिश्र, "काव्यशास्त्र", -"- पृ. १५०

५. डॉ. भगीरथ मिश्र, "काव्यशास्त्र", -"- पृ. १५१

६. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना" पृ. ८६

७. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना" पृ. ८५-८६

८. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना" पृ. ८७

९. डॉ. एस. पी. खत्री, "आलोचना इतिहास तथा सिद्धान्त", राजकमल प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, १९६४, पृ. ११६

१० डॉ. एस. पी. खत्री, "आलोचना इतिहास तथा सिद्धान्त", पृ. ३५४

११. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना," पृ. ९

१२. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी मे तुलनात्मक आलोचना", पृ. ८५-८६

१३. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना", पृ. १५३

१४. डॉ. बदरी प्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना", पृ. १५३

१५. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना", पृ. १५४

१६. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना", पृ. १५५

१७. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना," पृ. १५५

१८. डॉ बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना," पृ. १९४

१९. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना," पृ. १९६

२०. डॉ. बदरीप्रसाद, "हिन्दी में तुलनात्मक आलोचना," पृ. १९७

000000000